राजभाषा मासिक

ई -पत्रिका

दिसंबर , 2023 संस्करण

दामोदर घाटी निगम

राजभाषा मासिक
ई -पत्रिका

संपादकीय

राजभाषा ई-पत्रिका का नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्याधिक खुशी का अनुभव कर रहा हूँ । इस हिन्दी ई-पत्रिका के माध्यम से हम दामोदर घाटी निगम में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को अपनी सृजनात्मक और लेखन प्रतिभा का अभिव्यक्ति करने के लिए एक मंच प्रदान करते है ।

राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास तभी संभव है जब हम हिन्दी के सरल रूप को अपनाकर सभी कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करें । हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने पर ही राजभाषा के कार्यान्वयन में प्रभावी प्रगति होगी । भाषा का जितना अधिक प्रयोग एवं प्रसार होता है वह उतनी ही अधिक सम्पन्न होती जाती है । इस पत्रिका का प्रकाशन इसी दिशा में हमारा एक प्रयास है ।

आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक आपके लिए प्रेरणा का स्त्रोत साबित होगा। अंत में मैं उन सभी के प्रति हृदय से आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिन्होंने इस ई-पत्रिका के लिए अपनी रचनाओं का योगदान दिया है । पत्रिका के आगामी अंकों को और अधिक बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों और रचनात्मक सहयोग का हार्दिक स्वागत है ।

राकेश रंजन

कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)

राजभाषा मासिक
ई -पत्रिका

साम्राज्य से सौराज्य तक

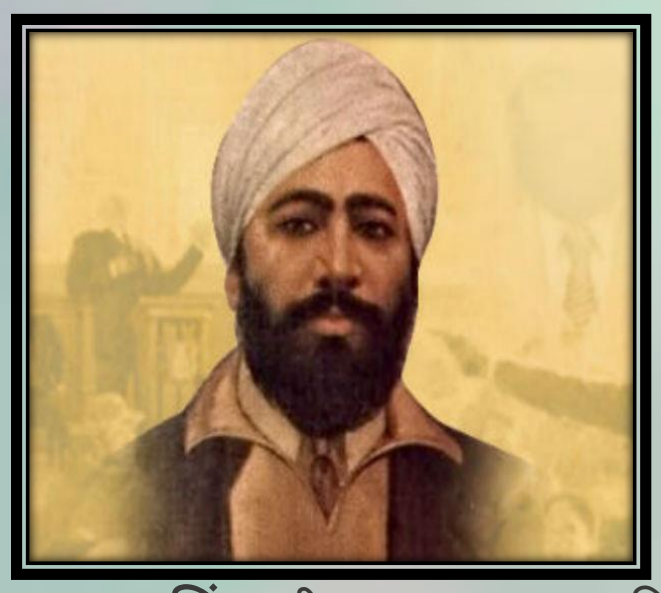

सरदार उधम सिंह

उधम सिंह जी का जन्म 26 दिसंबर, 1899 को पंजाब में संगरूर जिले के सुनाम गांव में एक सिख परिवार में हुआ था। उनके पिता रेलवे चौकीदार थे। उधम सिंह के बचपन का नाम शेर सिंह था। छोटी उम्र में माता-पिता के निधन के बाद उन्हें अपने बड़े भाई के साथ अमृतसर के अनाथालय में शरण लेनी पड़ी, जहां उन्हें नया नाम उधम सिंह मिला। हालांकि बाद में उन्होंने अपना नाम बदलकर राम मोहम्मद सिंह आजाद रख लिया, जो सर्वधर्म समभाव का प्रतीक था। अनाथालय में ही उनके बड़े भाई की मृत्यु होने के दो साल बाद उन्होंने मैट्रिक पास किया, फिर 1919 में उन्होंने अनाथालय छोड़ दिया और क्रांतिकारियों के साथ मिलकर आजादी की लड़ाई में शमिल हो गए। उसी साल अमृतसर के जलियांवाला बाग में अंग्रेजों ने खून की होली खेली थी। उधमसिंह अनाथ हो गए थे परंतु इसके बावजूद वह विचलित नहीं हुए और देश की आजादी तथा जनरल डायर को मारने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए लगातार काम करते रहे।

उधम सिंह जी ब्रिटिशों की नृशंसता की उस घटना के न केवल प्रत्यक्षदर्शी थे, बल्कि उस हादसे ने उनके जीवन पर भी बड़ा प्रभाव डाला। जलियांवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर उन्होंने जनरल डायर और पंजाब के तत्कालीन गवर्नर माइकल ओ डायर को सबक सिखाने की शपथ ली। भगत सिंह को उधम सिंह अपना गुरु मानते थे। डायर और माइकल ओ डायर को खत्म कर देने का यह लक्ष्य पूरा करने के लिए, क्रांतिकारियों से चंदा इकट्ठा कर उधम सिंह भारत से निकल गए। उन्होंने अलग-अलग नामों से अफ्रीका, नैरोबी, ब्राजील और अमेरिका की यात्रा की और वहां गदर पार्टी में शामिल हो गए। जनरल डायर की ब्रेन हेमरेज से 1927 में ही मौत हो गई थी। अतः उधम सिंह के निशाने पर अब सिर्फ ओ डायर थे।

वर्ष 1934 में वह ब्रिटेन पहुंचे और वहां 9, एल्डर स्ट्रीट कमर्शियल रोड पर रहने लगे। वहां उन्होंने यात्रा के उद्देश्य से एक कार खरीदी और साथ में अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए छह गोलियों वाली एक रिवाल्वर भी खरीद ली। भारत का यह वीर क्रांतिकारी, माइकल ओ डायर को ठिकाने लगाने के लिए उचित वक्त का इंतजार करने लगा। आखिरकार 1940 में उधम सिंह जी अपने सैकड़ों भाई-बहनों की मौत का बदला लेने का अवसर मिला।

जलियांवाला बाग के 21 साल बाद 13 मार्च, 1940 को रॉयल सेंट्रल एशियन सोसाइटी की लंदन के कॉक्सटन हॉल में एक बैठक थी। वहां ओ डायर भी वक्ताओं में शामिल थे। उधम सिंह ने एक किताब ली और उसके बीच का हिस्सा रिवाल्वर के आकार के अनुपात में काट दिया और रिवॉल्वर को उसमें छिपाकर रखा, फिर समय पर बैठक स्थल में पहुंच गए। बैठक खत्म होने के बाद दीवार के पीछे से मोर्चा संभालते हुए उधम सिंह जी ने ओ डायर पर गोलियां दाग दीं। ओ डायर को दो गोलियां लगी और तुरंत ही उनकी मौत हो गई।

उधम सिंह जी ने भागने की कोशिश नहीं की और वहीं अपनी गिरफ्तारी दी। उन पर मुकदमा चला अदालत में जज ने उसने पूछा कि माइकल ओ दायर के दोस्तों पर उन्होंने गोलियां क्यों नहीं चलाई? उधम सिंह का जवाब था, वहां कई औरतें मौजूद थीं और हमारी संस्कृति में औरतों पर हमला करना पाप है। उधम सिंह जी की इस बहादुरी की काफी तारीफ हुई।

4 जून, 1940 को उधम सिंह जी को हत्या का दोषी ठहराया गया, और 31 जुलाई, 1940 को पेंटनविले जेल में उन्हें फांसी दे दी गई। वर्ष 1974 में ब्रिटेन ने उधम सिंह जी के अवशेष भारत को सौंप दिए। उत्तराखंड के एक जिले का नाम उनके नाम पर उधम सिंह नगर रखा गया है। उनके जीवन पर सरदार उधम सिंह नाम से एक फिल्म भी बनी है।

राजभाषा मासिक
ई -पत्रिका

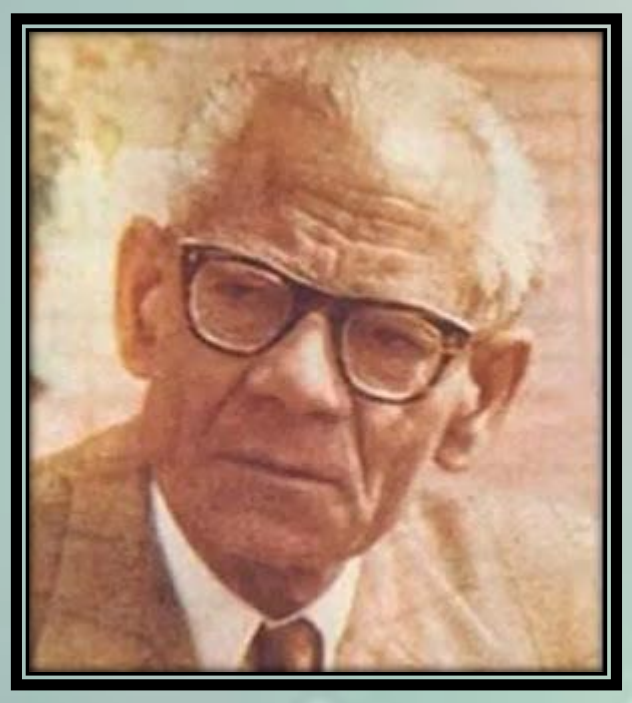

माह के चयनित साहित्यकार

यशपाल

यशपाल का जन्म 3 दिसंबर 1903 में फिरोजपुर छावनी के एक खत्री परिवार में हुआ था। उनके पिता हिरालाल एवं माता प्रेमा देवी आर्यसमजी थे । पंजाब के क्रांतिकारी नेता लाला लाजपतराय से उनका संपर्क हुआ तो वे बड़े होकर स्वधिनता आंदोलन से भी जुड़े ।

भगतसिंह से यशपाल की घनिष्ठता थी । उन्होने लाहौर के नेशनल कॉलेज से बीए किया तथा नाटककर उदयशंकर से उन्हे लेखन की प्रेरणा मिली । देशभक्त क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव से प्रेरित होकर इन्होंने क्रांतिकारि गतिविधियों में भाग लिया ।

जेल गए और वहाँ बरेली जेल में प्रकाशवती से विवाह किया । वे एक सफल कहानीकार, निबंधकार, नाटककार रहे हैं। यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित रहे हैं । अंतः उनकी रचनाओं पर मार्कस्वाद का प्रभाव हैं । वे एक यथार्थवादी रचनाकार रहे हैं । वे सामाजिक रूढ़ियों, पुरातनपंथी विचारों के घोर विरोधी रहे हैं , वे प्रगतिशील विचारक थे, अंतः: उनका व्यक्तित्व झलकता है ।

वे एक निर्भीक वक्ता, स्पष्टवादी और राष्ट्रवादी लेखक थे । अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन करते हुए अनेक बार जेल गए । क्रांतिकारी दल से जुड़े रहने के कारण उनमें थोड़ी उग्रता देखी गयी । यशपाल भारतीयता के साथ-साथ पाश्चात्य विचारधारा से भी प्रभावित रहे हैं ।

यशपाल हिन्दी साहित्य के प्रेमचंदोत्तर युगीन कथाकार हैं । ये विद्यार्थी जीवन से ही क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़े थे । इन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन 1970 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है।

कहानी संग्रह: तर्क का तूफान, भस्मावृत, धर्मयुद्ध, ज्ञानदास, फूलों का कुर्ता, पिंजरे की उड़ान, तुमने क्यों कहा मैं सुंदर हूँ, चिंगारी आदि ।

उपन्यास: दादा कामरेड, देशद्रोही, पार्टी कामरेड, अमिता, मनुष्य के रूप, झूठा सच, बारह घंटे, दिव्या आदि ।

निबंध संग्रह: चक्कर, क्लब, न्याय का संघर्ष, बात बात में, पत्र पत्रिका के दर्जनों लेख ।

यात्रा संस्मरण – राह बीती, लोहे की दीवारों के दोनों और आदि ।

श्रीमती शाश्वती महापात्र
सूचना व जनसंपर्क विभाग, कोलकाता

भारत चाँद की ओर

चंद्रयान-3 मिशन चन्द्रमा पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग भारत की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस प्रकार से भारत चन्द्रमा की सतह तक पहुंचने वाला इतिहास का चौथा देश बन गया तथा चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला पहला देश बन गया है।

चंद्रयान-2 के बाद चंद्रयान-3 भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन का चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित लैंडिंग और घूमने की भारत की क्षमता को प्रदर्शित करने का दूसरा प्रयास है ।

चंद्रयान-3 के मिशन का उद्देश्य चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग का प्रदर्शन करना, चंद्रमा पर रोवर के घूमने का प्रदर्शन करना और इन-सीटू वैज्ञानिक प्रयोगो का संचालन करना है। चंद्रयान-3 मिशन के उद्देश्यों में अन्तरिक्ष खोज और नवाचार में भारत की शक्ति को मजबूत करना शामिल है और उसको प्राप्त करने के लिए लैंडर में कई उन्नत प्रौद्योगिकियाँ मौजूद हैं, जैसे कि लेजर और आरएफ़-आधारित आल्टीमीटर, वेलोसिमीटर, प्रोपल्शन सिस्टम आदि ।

चंद्रयान-3 के वैज्ञानिक प्रयोग से चंद्रमा के बारे में, चंद्रमा की सतह और उसके संरचना के बारे में, चंद्रमा की गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र के बारे में, चंद्रमा की वायुमंडल के बारे में ।

भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन ने 14 जुलाई 2023 को 2.35 बजे भारत के सतीरा धवन अन्तरिक्ष केंद्र से जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉंच व्हीकल मार्क III (L V M 3) का उपयोग करके चंद्रयान -3 लॉंच किया गया था । 05 अगस्त को चंद्रयान-3 चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश किया और 17 अगस्त को लैंडर मॉड्यूल को प्रोपल्शन मॉड्यूल से अलग हुआ एवं 18 अगस्त को पहली डिवास्टिंग हुआ । चंद्रयान-3 के लैंडर मॉड्यूल लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान के साथ 23 अगस्त, 2023 को चन्द्र की दक्षिणी ध्रुव की सतह पर ऐतिहासिक सॉफ्ट लैंडिंग की।

चंद्रयान 3 तीन चरणों वाला प्रक्षेपण यान है, जिससे दो ठोस स्ट्रैप चरण और एक कोर तरल छनरन है। एलवीएम3 ने मॉड्यूल को लगभग (170x 36500) किमी एक जीटीओ की अंडाकार पार्किंग कक्ष में रखा गया था । लैंडर मॉड्यूल में एक लैंडर विक्रम और एक रोवर प्रज्ञान शामिल है। विक्रम 1752 केजी भारी है और 4.5 मीटर लंबा है । प्रज्ञान छह पहियों वाला 26 किलो का वाहन है और 6.5 मीटर लंबा है ।

यह मुख्यतः चन्द्र सतह की संरचना, पानी की बर्फ की उपस्थिति, चन्द्र प्रभाव इतिहास और वायुमंडल के विकास की जांच की ।

लैंडर और रोवर का कुल जीवनकाल चन्द्र दिवस यानि पृथ्वी के 14 दिन है ।

लैंडर मॉड्यूल ने स्वचालित लैंडिंग अनुक्रम (एएलसी) का उपयोग करके नरम लैंडिंग की जहां लैंडर ने अपना इंजन (थ्रस्टर) शुरू किया और मॉड्यूल की गति और दिशा के साथ-साथ लैंडिंग साइट की स्थिति को भी नियंत्रित किया । ऐतिहासिक काउंटडाउन के बाद इसके अंदर का रोवर अपने मिशन के दौरान चन्द्र सतह का इन-सीटू रसायानिक विश्लेषण करने के लिए चन्द्र सतह पर उतरा ।

.....****.....

सुश्री वैभवश्री चौरड़िया [सुपुत्री – श्री शुभकरण चौरड़िया, मानव संसाधन विभाग, कोलकाता] द्वारा बनाई गई पेंसिल स्केच्च जिसका शीर्षक है **“काश...”**

कृष्णावल....!!!

यदि आज की आधुनिक शिक्षा प्राप्त पीढ़ी से आप पूछें कि "कृष्णावल" क्या है तो संभव है कि 98% तो यही कहेंगे कि उन्होंने यह शब्द सुना कभी सुना ही नहीं है।

पर यदि आप दादी नानी से पूछें या पचास वर्ष पूर्व के लोगों से पूछें तो वे आपको बता देंगे कि गाँव में "कृष्णावल" प्याज या पालंडु को कहा जाता है। और यह शब्द ही प्याज के लिए प्रचलित था उस समय में।

प्याज को ग्रामीण क्षेत्रों में कांदा भी कहते हैं।

अंग्रेजी में इसे Onion ऑनियन या अन्यन कहते हैं। यह कंद श्रेणी में आता है जिसकी सब्जी भी बनती है और इसे सब्जी बनाने में मसालों के साथ उपयोग भी किया जाता है।

इसे संस्कृत में कृष्णावल कहते थे।

वैसे इस शब्द को विस्मृत कर दिया गया है और आजकल यह शब्द प्रचलन में नहीं है।

कृष्णावल कहने के पीछे एक रहस्य छुपा हुआ है।

आईए, देखिए कि प्याज को क्यों कहते हैं कृष्णावल.!

1. दक्षिण भारत में खासकर कर्नाटक और तमिलनाडु के ग्रामीण क्षेत्रों में प्याज को आज भी कृष्णावल नाम से ही जाना जाता है।

2. इसे कृष्णवल कहने का तात्पर्य यह है कि जब इसे खड़ा काटा जाता है तो वह शङ्खाकृति यानी शङ्ख के आकार में दिखता है।

वहीं जब इसे आड़ा काटा जाता है तो यह चक्राकृति यानी चक्र के आकार में दिखाई देता है।

3. आप जानते ही हैं कि शङ्ख और चक्र दोनों श्री हरि विष्णु के आयुधों में से हैं और श्री कृष्ण जी श्री हरि के दशावतार में ही पूर्णावतार (नवें अवतार) हैं।

4. शङ्ख और चक्र की आकृतियों के कारण ही प्याज को कृष्णावल कहते हैं।

कृष्ण और वलय शब्दों को मिलाकर बना "कृष्णावल" शब्द है।

5. कृष्णावल कहने के पीछे केवल यही एक कारण नहीं है ; अपितु यदि आप प्याज को उसकी पत्तियों के साथ उलटा पकड़ेंगे तो वह गदा का भी रूप ले लेता है।

यह भी रोचक है कि यदि पत्तों के काट दिया जाए तो वह पद्म यानी कमल का आकार लेता है।

गदा और पद्म भी भगवान श्री हरि विष्णु के आयुध हैं जिसे वे चक्र और शङ्ख के साथ धारण करते हैं।

यह दुर्भाग्यपूर्ण विडंबना ही है कि आजकल किन्नर जैसा रूप धरे कथित धार्मिक कथावाचक, जो केवल अपने आप को ही धर्म का झण्डावरदार समझते हैं ; इस कृष्णावल की निंदा में अनर्गल बातें करते हैं और घृणित शब्दों से इसे लांछित कर रहे हैं।

-साभार/संशोधन/संकलन

राजभाषा मासिक
ई -पत्रिका

डीवीसी गतिविधियां

ऊर्जा दक्षता ब्यूरो, ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में 16.11.2023 को डीवीसी मुख्यालय द्वारा पश्चिम बंगाल राज्य में ऊर्जा संरक्षण पर राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता-2023 का आयोजन किया गया

राजभाषा मासिक
ई -पत्रिका

डीवीसी गतिविधियां

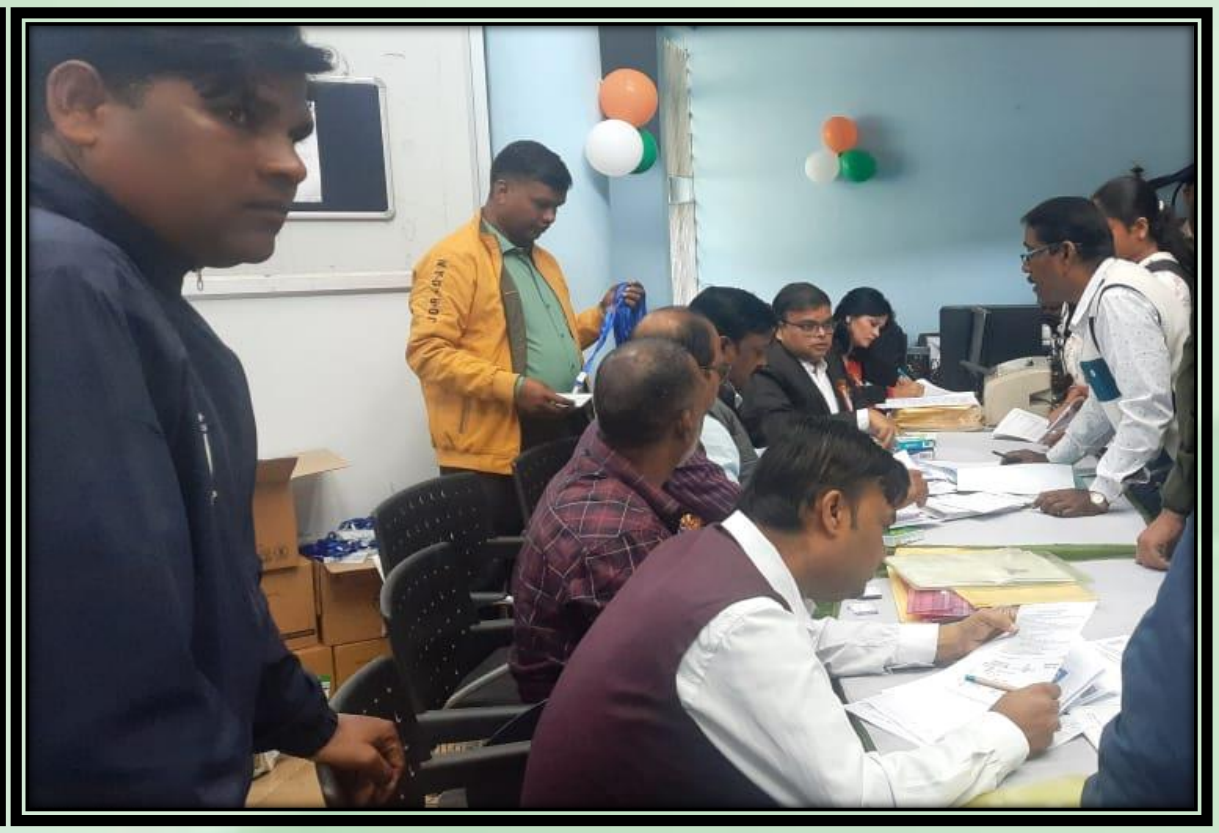

ऊर्जा दक्षता ब्यूरो, ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में 16.11.2023 को डीवीसी रांची आरडी कार्यालय द्वारा झारखंड राज्य में ऊर्जा संरक्षण पर राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता-2023 का आयोजन किया गया

राजभाषा मासिक
ई -पत्रिका

प्रशासनिक शब्दावली

Intrinsic value	आंतरिक मूल्य	Memo sheet	ज्ञापन पत्र
Introspection	अंतर्निरीक्षण	Mitigation	न्यूनीकरण
Investigation report	अन्वेषण रिपोर्ट	Money wage	नकद मजदूरी
Invoice	बीजक	Modality	कार्य-रीति
Ipso jure	विधित:	Moderation	अनुशोधन
Issue diary	निर्गम डायरी	Normative	नियामक
Itinerary	यात्राक्रम	Readjust	पुन: समायोजित करना
Joint ownership	संयुक्त स्वामित्व	Recapitualation	सार-कथन
Jurisdiction	अधिकारिता	Reconciliation	समाधान
Key post	मुख्य पद	Receptive	ग्रहणशील
Labour welfare	श्रम कल्याण	Redressal	निवारण
Last Payment	अंतिम भुगतान	Registered	पंजीकृत
Lateral relations	पार्श्विक संबंध	Scenario	परिदृश्य
Layout	अभिन्यास	Sanctity	पवित्रता
Legible	सुपाठ्य	Savingram	बचत-तार
Legitimate	विधिसम्मत	Segment	खंड
Merger	विलयन	Sine quo non	अपरिहार्य शर्त
Memoirs	संस्मरण	Tactful	व्यवहारकुशल

राजभाषा मासिक
ई -पत्रिका

अक्तूबर, 2023 में सेवानिवृत्त कर्मचारीगण

क्रम संख्या	नाम	पदनाम	विभाग	परियोजना
1.	श्री कल्याण कुमार रक्षित	सहायक प्रबन्धक (यां)	ओ एंड एम	एमटीपीएस
2.	श्री दीपक कुमार मंडल	सहायक प्रबन्धक (यां)	ओ एंड एम	डीटीपीएस
3.	श्री सुधीर कुमार	प्रबन्धक(विद्युत)	ओ एंड एम	सीटीपीएस
4.	श्री सुबल बनर्जी	कार्यपालक (रोकड़)	वित्त एवं लेखा	मैथन
5.	श्री संजीत कुमार बंदोपाध्याय	उप प्रबन्धक(विद्युत)	जल	पंचेत
6.	श्री तपन कुमार मंडल	प्रबन्धक(विद्युत)	सीएलडी	मैथन
7.	श्री प्रबीर कुमार रॉय	सहायक प्रबन्धक (विद्युत)	पन विद्युत	पंचेट
8.	श्री प्रद्युत कुमार सिन्हा महापात्र	उप प्रबन्धक(यांत्रिकी)	ओ एंड एम	एमटीपीएस
9.	श्री मनोज कुमार रॉय	प्रबन्धक(वित्त)	वित्त एवं लेखा	आरटीपीएस
10.	श्री अशीम मंडल	उप प्रबन्धक(सिविल)	सिविल	डीएसटीपीएस
11.	श्री असीम नंदी	कार्यपालक निदेशक (वि)	प्रणाली	कोलकाता
12.	श्री राकेश रंजन पांडे	वरिष्ठ महा प्रबन्धक(यांत्रिकी)	ईएमपीसी	कोलकाता
13.	श्री सुनील कुमार सिंह	वरिष्ठ महा प्रबन्धक(सिविल)	सिविल	आरटीपीएस
14.	श्री राजेंद्र प्रसाद सिन्हा	उप महा प्रबन्धक (मा.सं.)	मानव संसाधन	आरटीपीएस
15.	श्री इंद्रजीत मित्रा	कार्यालक अधीक्षक (पीजी-1)	वित्त एवं लेखा	कोलकाता
16.	श्री अविजित पॉल	सर्वेक्षक पीजी-2	प्रणाली	टीएससी (पंचेत)
17.	श्री सुजीत दास	सहायक	सिविल	डीटीपीएस
18.	मोहम्मद गयासुद्दीन	सहायक	ओ एंड एम	कोनार
19.	श्री राणा एंड्रयू	वरिष्ठ भंडारपाल (पीजी)	प्रणाली	संचार (जमशेदपुर)
20.	श्री महेश कुमार	सहायक नियंत्रक(यां)पीजी-2	ओ एंड एम	सीटीपीएस
21.	श्री सैयद फ़ैज़ान ग़नी	कार्यालय अधीक्षक (पीजी)	एससीडी	हजारीबाग
22.	श्री सुबल भंडारी	प्रचालन (यांत्रिकी)	पन विद्युत	मैथन
23.	श्री विकास कुमार सिंह	तकनीशियन ग्रेड-I	ओ एंड एम	सीटीपीएस
24.	श्री प्रणव कुमार हाजरा	हेड ड्राफ्ट्समैन (पीजी)	सिविल	मैथन
25.	श्री जयंत कुमार चट्टोपाध्याय	कार्यालय अधीक्षक	सीएंडएम	कोलकाता
26.	एसके अब्दुल मुल्तालेब	चार्जहैंड	प्रणाली	ट्रांसमिशन(जमशेदपुर)
27.	श्री निल्यानंद बंदोपाध्याय	चार्जहैंड	प्रणाली	ट्रांसमिशन (हावड़ा)
28.	श्री तपन कुमार बिद	चार्जहैंड	प्रणाली	ट्रांसमिशन (दुर्गापुर)
29.	श्री हरगोपाल गायेन	तकनिकी सहायक	प्रणाली	ट्रांसमिशन (दुर्गापुर)
30.	श्री कानाई चंद मंडल	तकनिकी सहायक	सिविल	डीटीपीएस
31.	श्री तपन कुमार मंडल	सहायक	सिविल	डीटीपीएस
32.	श्री विश्वनाथ सेन	सहायक	सिविल	डीटीपीएस
33.	श्री सुनील कुमार	सहायक ग्रेड- II	सिविल	सीटीपीएस
34.	मोहम्मद अब्दुल हक़	कनिष्ठ खलासी	ओ एंड एम	बीटीपीएस
35.	श्रीमती शीतला दे (घोषाल)	हेल्पर संदेशवाहक	ओ एंड एम	एमटीपीएस